RNA : Real News Analysis

DAILY CURRENT AFFAIRS

UPSC, STATE PCS, SSC, RAILWAY, BANKING, DEFENCE,
और अन्य सभी सरकारी परीक्षाओं के लिए अति महत्वपूर्ण

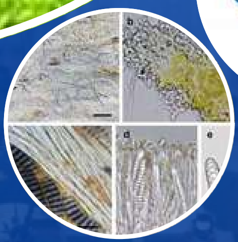

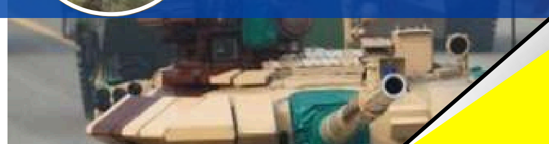

DATE
अगस्त
09
2025

Key Point

1. National News
2. International News
3. Govt. Mission, Apps
4. Awards & Honours
5. Sports News
6. Economic News
7. Newly Appointment
8. Defence News
9. Important Days
10. Technology News
11. Obituary News
12. Books & Authors

By Ankit Avasthi Sir

नीलगिरि तहर की जनसंख्या में 21% की वृद्धि / Nilgiri Tahr Population Rise 21%

संदर्भ:

2025 में केरल और तमिलनाडु द्वारा संयुक्त रूप से किए गए नीलगिरी तहर की जनगणना में कुल 2,668 तहर दर्ज किए गए हैं। यह आंकड़ा संरक्षण प्रयासों की सफलता को दर्शाता है और दोनों राज्यों के बीच बेहतर सहयोग की आवश्यकता को उजागर करता है।

नीलगिरी तहर:

स्थानिकता (Endemism):

- केवल **नीलगिरी की पहाड़ियों** और **दक्षिणी पश्चिमी घाट** (केरल और तमिलनाडु) में पाया जाता है।
- यह इस क्षेत्र के **मोंटेन घासभूमि पारिस्थितिकी तंत्र** का प्रमुख प्राणी है।

पारिस्थितिक भूमिका (Ecological Role):

- यह घासभूमि का **मुख्य चरने वाला प्राणी (Key Grazer)** है, जिससे:
  - **घासभूमि का पुनर्जनन (regeneration)** होता है,
  - **अवांछित वनस्पतियों पर नियंत्रण** रहता है,
  - और पारिस्थितिक संतुलन बना रहता है।

आवास (Habitat)

- **शोला जंगलों** के बीच फैली **खुली मोंटेन घासभूमियों** में पाया जाता है।
- ऊँचाई: **1,200 से 2,600 मीटर** (3,900 से 8,500 फीट)।
- इसकी पसंदीदा जगहें: **खड़ी चट्टानी ढलानें**, **पहाड़ी किनारे**, और **खुले घास के मैदान** – जहाँ से यह शिकारी को जल्दी देख सके।

जनसंख्या और वितरण (Population & Distribution)

- **कुल अनुमानित संख्या**: लगभग **3,122** प्राणी।
- अपने ऐतिहासिक आवास क्षेत्र के **14% में स्थानीय रूप से विलुप्त**।

केरल (लगभग 1,365 प्राणी):

- **एराविकुलम नेशनल पार्क (Eravikulam NP)** – सबसे बड़ी आबादी (~841)
- **अनामलाई हिल्स क्षेत्र**

तमिलनाडु (लगभग 1,303 प्राणी):

- **मुकुर्थी नेशनल पार्क**
- **ग्रास हिल्स नेशनल पार्क**
- **कलक्कड–मुंडनथुरै टाइगर रिजर्व** (कम संख्या में)

संरक्षण स्थिति (Conservation Status)

- **IUCN रेड लिस्ट**: *अति संकटग्रस्त*
- **भारतीय वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम, 1972**: *अनुसूची-I* (सर्वोच्च सुरक्षा श्रेणी)

सांस्कृतिक महत्व (Cultural Significance)

- **तमिलनाडु का राजकीय पशु** घोषित।
- **तमिल संगम साहित्य** (लगभग 2,000 वर्ष पूर्व) में उल्लेख मिलता है।
- **मेसोलिथिक काल की शैलचित्र कला** (10,000–4,000 ई.पू.) में भी चित्रित – जो इसके ऐतिहासिक महत्व को दर्शाता है।

नीलगिरी तहर की जनसंख्या में 21% की वृद्धि:

यह क्या है? यह एक **समन्वित द्वैवार्षिक सर्वेक्षण** है, जिसका उद्देश्य नीलगिरी तहर की पूरी आवास सीमा में उसकी **जनसंख्या का आकलन** करना है।

सर्वेक्षण का संचालन:

- **तमिलनाडु और केरल वन विभाग** द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित।
- इसमें **786 फील्ड स्टाफ** ने भाग लिया, जिन्होंने:
  - **3,126 किमी** पैदल यात्रा की,
  - **14 वन प्रभागों** में फैले **177 ब्लॉकों** को कवर किया।

मुख्य निष्कर्ष (Key Findings):

जनसंख्या में वृद्धि:

- **2024** में: 1,031
- **2025** में: **1,303** (कुल **21% वृद्धि प्रमुख**)

स्थान: अक्कामलाई ग्रास हिल्स (अनामलाई टाइगर रिजर्व): 334 तहर

- **मुकुर्थी नेशनल पार्क**: **282 तहर** – तमिलनाडु में कुल संख्या का लगभग **50%**

भारत, रूस ने दुर्लभ मृदा खनिज निष्कर्षण पर चर्चा की / India, Russia discuss rare earth mineral extraction

संदर्भ:

भारत और रूस ने अपनी रणनीतिक साझेदारी को एक बार फिर मजबूती देते हुए औद्योगिक सहयोग, विशेष रूप से दुर्लभ पृथ्वी खनिजों और महत्वपूर्ण संसाधनों के निष्कर्षण पर नए सिरे से ध्यान केंद्रित किया है। यह पहल ऐसे समय में सामने आई है जब अमेरिका द्वारा भारत के रूस के साथ तेल व्यापार को लेकर दबाव बढ़ाया जा रहा है।

रणनीतिक खनिज सहयोग के लिए कार्य समूह ढांचा:

भारत-रूस सहयोग की पृष्ठभूमि:

- यह चर्चा भारत-रूस वर्किंग ग्रुप ऑन मॉडर्नाइजेशन एंड इंडस्ट्रियल कोऑपरेशन की बैठक के दौरान हुई।
- यह बैठक भारत-रूस अंतर-सरकारी आयोग के व्यापार, आर्थिक, वैज्ञानिक, तकनीकी और सांस्कृतिक सहयोग ढांचे के तहत आयोजित की गई।
- यह एक संस्थागत तंत्र (institutional mechanism) है, जो कई औद्योगिक क्षेत्रों में द्विपक्षीय सहयोग को बढ़ावा देता है।

स्वच्छ ऊर्जा के लिए आवश्यक महत्वपूर्ण खनिज (Critical Minerals):

इन खनिजों का महत्व:

- **कॉपर (तांबा), लिथियम, निकल, कोबाल्ट** और **रेयर अर्थ्स** जैसे खनिज:
  - स्वच्छ ऊर्जा प्रौद्योगिकियों (Clean Energy Technologies) के लिए अति आवश्यक कच्चे पदार्थ हैं।

प्रमुख उपयोग:

- इनका उपयोग निम्नलिखित क्षेत्रों में होता है:
  - पवन टरबाइन (Wind Turbines)
  - बिजली नेटवर्क (Electricity Networks)
  - इलेक्ट्रिक वाहन (Electric Vehicles)
  - बैटरी निर्माण (Battery Manufacturing)

भारत के लिए रणनीतिक महत्व: यह सहयोग भारत के **ऊर्जा संक्रमण (Energy Transition)** लक्ष्यों की दिशा में **रणनीतिक रूप से बेहद महत्वपूर्ण** है।

चीन पर अत्यधिक निर्भरता:

- **चीन** वैश्विक REE आपूर्ति का **85%–95%** नियंत्रित करता है।
- हाल ही में चीन द्वारा लगाए गए **निर्यात प्रतिबंधों** के कारण:
  - भारत के **ऑटोमोबाइल उत्पादन** में रुकावट आई।
  - आपूर्ति श्रृंखला (Supply Chain) की **कमजोरियाँ उजागर** हुईं।

भारत-रूस की रणनीतिक पहलें:

1. **संयुक्त उपक्रम (Joint Ventures) की खोज:**
   - दुर्लभ पृथ्वी और महत्वपूर्ण खनिजों (Critical Minerals) की खान व निष्कर्षण (Mining & Extraction) में साझेदारी।
2. **भूमिगत कोयला गैसीकरण (Underground Coal Gasification):**
   - आधुनिक औद्योगिक अवसंरचना (Industrial Infrastructure) पर विशेष ध्यान।
3. **प्रौद्योगिकी हस्तांतरण (Technology Transfer):**
   - खनन उपकरणों (Mining Equipment) और खनिज अन्वेषण (Exploration) में
   - क्षमता निर्माण (Capacity Building) को बढ़ावा देना।

वैश्विक व्यापार परिवर्तनों के बीच रणनीतिक समय :

यह बैठक ऐसे समय हुई जब **अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप** ने **भारत पर उच्च टैरिफ (High Tariffs)** लगाने की घोषणा की।

- इस कदम ने भारत की वैश्विक **आर्थिक साझेदारियों में विविधता लाने (diversify economic partnerships)** की आवश्यकता को और अधिक महत्वपूर्ण बना दिया।

भारत-रूस सहयोग का महत्व: इस संदर्भ में **भारत-रूस सहयोग**:

- **रणनीतिक खनिज संसाधनों** तक पहुंच सुनिश्चित करने में सहायक है।
- **औद्योगिक सहयोग** के नए अवसर खोलता है।
- भारत को **विकल्प आधारित रणनीतिक साझेदारियाँ** विकसित करने में मदद करता है।

राज्य का दर्जा बहाल करना / Restoration of the statehood

संदर्भ:

जम्मू-कश्मीर को **पूर्ण राज्य का दर्जा** वापस देने की मांग एक बार फिर सुर्खियों में है। इस मुद्दे को लेकर दायर याचिका पर सुप्रीम कोर्ट में 8 अगस्त को सुनवाई होनी थी। यह याचिका जम्मू-कश्मीर के प्रोफेसर जहूर अहमद भट्ट और सामाजिक कार्यकर्ता खुर्शीद अहमद मलिक ने दाखिल की है। याचिकाकर्ताओं ने केंद्र सरकार को तय समयसीमा में जम्मू-कश्मीर को पूर्ण राज्य का दर्जा बहाल करने का निर्देश देने की मांग की है। यह मामला न केवल संवैधानिक अधिकारों से जुड़ा है, बल्कि जम्मू-कश्मीर के लोगों की राजनीतिक आकांक्षाओं और आत्मनिर्णय के सवाल को भी केंद्र में लाता है।

क्या होता है 'पूर्ण राज्य' का दर्जा?

'पूर्ण राज्य' का दर्जा वह संवैधानिक मान्यता है, जिसके तहत किसी क्षेत्र को स्वशासित राज्य के रूप में स्थापित किया जाता है। इसे स्वतंत्र विधायिका (विधानसभा), कार्यपालिका (मुख्यमंत्री और मंत्रिपरिषद), तथा व्यापक वित्तीय और विधायी अधिकार प्राप्त होते हैं।

भारत में प्रशासनिक दृष्टि से दो प्रमुख व्यवस्थाएं हैं:

1. **पूर्ण राज्य** – जहां जनता अपने प्रतिनिधियों को चुनती है और स्थानीय सरकार नीतियां तय करती है।
2. **केंद्रशासित प्रदेश** – जहां अधिकतर अधिकार केंद्र सरकार के अधीन होते हैं और शासन-प्रशासन की जिम्मेदारी केंद्र द्वारा नियुक्त उपराज्यपाल या प्रशासक के पास होती है। कई केंद्रशासित प्रदेशों में तो विधानसभा भी नहीं होती।

कैसे मिलता है पूर्ण राज्य का दर्जा?

भारतीय संविधान के **अनुच्छेद 3** के अंतर्गत केंद्र सरकार को यह अधिकार प्राप्त है कि वह किसी क्षेत्र को पूर्ण राज्य का दर्जा दे सके। प्रक्रिया इस प्रकार होती है:

- सबसे पहले गृह मंत्रालय उस क्षेत्र की ज़मीनी स्थिति, जनता की भावना, प्रशासनिक आवश्यकताओं और नेताओं की राय को ध्यान में रखते हुए एक प्रस्ताव तैयार करता है।
- इसके बाद संसद में एक विधेयक लाया जाता है, जिसमें सीमाओं में बदलाव, नाम परिवर्तन या नया राज्य बनाए जाने का प्रस्ताव होता है।
- लोकसभा और राज्यसभा में यह विधेयक साधारण बहुमत से पारित होना आवश्यक होता है।
- अंतिम मंजूरी राष्ट्रपति द्वारा दी जाती है, जिसके बाद संबंधित क्षेत्र को संवैधानिक रूप से पूर्ण राज्य का दर्जा प्राप्त हो जाता है।

जम्मू-कश्मीर को पूर्ण राज्य का दर्जा मिलने से क्या होंगे बड़े बदलाव?

- यदि जम्मू-कश्मीर को पुन: पूर्ण राज्य का दर्जा मिलता है, तो वहां शासन-प्रशासन में निम्नलिखित बड़े बदलाव देखने को मिलेंगे:
- **1. विधायी शक्तियों का विस्तार:** राज्य की विधानसभा सार्वजनिक व्यवस्था, पुलिस, शिक्षा जैसे विषयों पर स्वतंत्र रूप से कानून बना सकेगी।
- **2. वित्तीय स्वायत्तता में वृद्धि:** राज्य सरकार को बजट और अन्य वित्तीय विधेयकों के लिए उपराज्यपाल की मंजूरी नहीं लेनी पड़ेगी।

3. प्रशासनिक नियंत्रण राज्य सरकार के पास होगा:

- एंटी करप्शन ब्यूरो (ACB) और अखिल भारतीय सेवाओं (IAS, IPS) पर सीधा नियंत्रण राज्य सरकार के पास होगा।
- अधिकारियों की नियुक्ति, तबादले और पदस्थापन का निर्णय राज्य सरकार करेगी। उपराज्यपाल की भूमिका सीमित हो जाएगी।

4. व्यापार व वाणिज्य में सशक्त भूमिका: संविधान के अनुच्छेद 286, 287, 288 और 304 के तहत राज्य को टैक्स व व्यापारिक फैसलों में अधिक स्वतंत्रता मिलेगी।

5. मंत्रिपरिषद में वृद्धि की संभावना: केंद्रशासित प्रदेशों में मंत्रियों की संख्या केवल 10% तक सीमित होती है, जबकि राज्य बनने पर यह सीमा 15% तक बढ़ाई जा सकेगी।

6. कानून-व्यवस्था पर नियंत्रण: राज्य सरकार के पास पुलिस और कानून-व्यवस्था का पूर्ण नियंत्रण होगा।

7. भूमि और खनिज पर अधिकार: राज्य सरकार भूमि, खनिज और राजस्व नीति पर अपने स्तर पर निर्णय

8. राज्यपाल की भूमिका होगी प्रतीकात्मक: उपराज्यपाल की जगह राज्यपाल की नियुक्ति होगी, जिनकी भूमिका अधिकतर औपचारिक होगी, जैसा भारत के अन्य राज्यों में होता है।

किन केंद्रशासित प्रदेशों को अब तक मिला पूर्ण राज्य का दर्जा?

भारत में कुछ केंद्रशासित प्रदेशों को समय-समय पर पूर्ण राज्य का दर्जा प्रदान किया गया है। प्रमुख उदाहरण:

- **आंध्र प्रदेश (1956):** पहले मद्रास राज्य का हिस्सा था।
- **महाराष्ट्र और गुजरात (1960):** पहले बॉम्बे राज्य में शामिल थे; भाषायी आधार पर विभाजन हुआ।
- **नागालैंड (1963):** पूर्वोत्तर क्षेत्र को अलग पहचान
- **तेलंगाना (2014):** आंध्र प्रदेश से अलग होकर भारत का 29वां राज्य बना।

उत्तरकाशी से धराली गांव की आपदा की सैटेलाइट तस्वीर / Satellite image of the disaster in Dharali village from Uttarkashi

संदर्भ:

उत्तरकाशी के धराली गांव में 5 अगस्त को आई अचानक बाढ़ ने भारी तबाही मचाई, जिससे पूरा गांव मलबे में दब गया। इस त्रासदी में कई भवन पूरी तरह ध्वस्त हो गए और नदी के प्रवाह में भी बदलाव आया। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (ISRO) ने 8 अगस्त को **सैटेलाइट इमेज** जारी कर बताया कि धराली और हर्षिल गांवों में लगभग **20 हेक्टेयर क्षेत्र** बाढ़ और भूस्खलन से प्रभावित हुआ है। वर्तमान में राहत एवं बचाव कार्य जारी हैं।

उत्तरकाशी आपदा:

आपदा की शुरुआत 5 अगस्त 2025 को दोपहर 1:30 बजे के आसपास उत्तरकाशी जिले के धराली क्षेत्र में भारी आपदा आई। खीरगंगा नदी उफान पर आ गई और अपने साथ मलबा और गाद लेकर धराली कस्बे में घुस गई, जिससे भारी तबाही मच गई। शुरुआती रिपोर्टों में एक नहीं बल्कि कई बादल फटने की घटनाओं की बात कही गई, जिनमें से एक घटना सुखी टॉप के पास बताई गई।

विज्ञान क्या कहता है?

हालांकि बादल फटने की खबरें थीं, लेकिन मौसम विभाग की रिकॉर्डिंग ने चौंकाने वाली जानकारी दी। आपदा के दिन:

- हरसिल में मात्र **6.5 मिमी** वर्षा हुई।
- भटवाड़ी में **24 घंटे में केवल 11 मिमी** बारिश दर्ज हुई।

जबकि तकनीकी रूप से 'बादल फटना' तभी कहा जाता है जब किसी छोटे क्षेत्र में **प्रति घंटे 100 मिमी से ज्यादा** बारिश हो। ऐसे में इन आंकड़ों के आधार पर इसे बादल फटना नहीं कहा जा सकता।

फिर इतनी बड़ी तबाही कैसे हुई?

विशेषज्ञों का मानना है कि इस घटना के पीछे **ग्लेशियल लेक आउटबर्स्ट फ्लड (GLOF)** या **हिमनद ध्वस्त (Glacier Collapse)** होने की संभावना ज्यादा है।

- दरअसल, जलवायु परिवर्तन के कारण ग्लेशियर तेजी से पिघल रहे हैं और उनके नीचे **झीलें बन रही हैं**, जो समय के साथ बड़ी और खतरनाक होती जा रही हैं।
- इन झीलों के टूटने से अचानक बहुत ज्यादा पानी और मलबा नीचे की तरफ बह जाता है, जिससे नदी में बाढ़ जैसी स्थिति बन जाती है – ठीक वैसा ही जैसा धराली में हुआ।

आपदा प्रबंधन में ISRO की भूमिका: अंतरिक्ष से सुरक्षा की निगरानी

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (ISRO) केवल अंतरिक्ष मिशन ही नहीं करता, बल्कि भारत में प्राकृतिक आपदाओं से निपटने में भी एक अहम भूमिका निभाता है।

पृथ्वी अवलोकन उपग्रह का योगदान

- **Cartosat, RISAT जैसे उपग्रहों** से देशभर की सतह का लगातार अवलोकन किया जाता है।
- **ऑप्टिकल सेंसर** दिन के समय दृश्य प्रकाश में तस्वीरें लेते हैं – जैसे खेत, मकान, सड़कें।
- **रडार सेंसर (SAR)** बादलों और अंधेरे में भी काम करते हैं – जैसे बाढ़ और भूस्खलन की स्थिति में।

तकनीकी नवाचार: अंतरिक्ष से बुद्धिमत्ता तक

- **SAR तकनीक (NISAR मिशन)**: ज़मीन की छोटी-छोटी हरकतों को भी पहचान लेती है – जैसे भूकंप, ग्लेशियर पिघलना।
- **AI और Deep Learning**: उपग्रह डेटा का विश्लेषण करके **क्षति का अनुमान और प्रभावित क्षेत्रों की पहचान** अपने आप की जाती है।
- **GIS तकनीक (QGIS प्लेटफ़ॉर्म)**: नक्शों में उपग्रह चित्रों को जोड़कर **राहत के लिए रणनीति** बनाई जाती है।

आपदा के समय ISRO कैसे करता है मदद?

- **रीयल-टाइम निगरानी**: बाढ़, भूकंप, चक्रवात की स्थिति में तुरंत अपडेट देता है।
- **क्षति मूल्यांकन**: पहले और बाद की तस्वीरों की तुलना करके नुकसान की सटीक रिपोर्ट बनती है।
- **पूर्व चेतावनी**: चक्रवात और भारी बारिश जैसे खतरों के लिए समय रहते चेतावनी भेजी जाती है।
- **राहत कार्य योजना**: प्रभावित क्षेत्रों की पहचान कर राहत सामग्री और संसाधनों का सही वितरण

प्रमुख उदाहरण:

- **उत्तरकाशी (2025):** Cartosat-2S ने फ्लैश फ्लड के बाद मलबे के बहाव की स्थिति का विश्लेषण किया।
- **म्यांमार भूकंप:** Cartosat-3 से ऐतिहासिक स्थलों पर पड़े प्रभाव को समझा गया।
- **वायनाड, केरल:** RISAT रडार से भूस्खलन क्षेत्र का विस्तार और नुकसान का मानचित्रण किया गया।
- **प्रयागराज कुंभ मेला**

भारत फोरकास्ट सिस्टम / BharatFS

संदर्भ:

भारत ने अत्याधुनिक मौसम पूर्वानुमान प्रणाली **'भारत फोरकास्ट सिस्टम' (BharatFS)** विकसित की है, जो अत्यधिक वर्षा की भविष्यवाणी में पहले की तुलना में **30% अधिक सटीकता** प्रदान करती है। यह नई प्रणाली मौसम आपदाओं से समय रहते सतर्क करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण वैज्ञानिक उपलब्धि मानी जा रही है।

भारतFS: देश का सबसे उन्नत मौसम पूर्वानुमान मॉडल

BharatFS (भारत फोरकास्ट सिस्टम) भारत का सबसे उन्नत *रीयल-टाइम वैश्विक मौसम पूर्वानुमान मॉडल* है, जिसे पुणे स्थित IITM ने नोएडा के NCMRWF और भारतीय मौसम विभाग (IMD) के साथ मिलकर विकसित किया है।

यह "मेक इन इंडिया" पहल का एक प्रमुख उत्पाद है और आत्मनिर्भर भारत (Atmanirbhar Bharat) के लक्ष्य को मजबूत करता है।

मुख्य विशेषताएं:

- **उच्चतम वैश्विक रिज़ॉल्यूशन:** भारतFS में *Triangular Cubic Octahedral (TCo)* ग्रिड तकनीक का उपयोग किया गया है, जो 6 किमी की बेहद सूक्ष्म क्षैतिज रेज़ोल्यूशन प्रदान करता है — यह दुनिया में *ऑपरेशनल रीयल-टाइम मॉडल्स* में सबसे ज्यादा है।
- **पहले से बेहतर:** यह पुराने GFS T1534 मॉडल (12 किमी रेज़ोल्यूशन) से एक बड़ा सुधार है और दुनियाभर के अन्य प्रमुख मॉडल्स (9–14 किमी के बीच) से भी अधिक उन्नत है।
- **स्थानीय स्तर तक पूर्वानुमान:** इतनी सूक्ष्मता के साथ, BharatFS अब *गाँव/पंचायत स्तर तक* का सटीक मौसम पूर्वानुमान देने में सक्षम है।
- **प्रभावशाली उपयोग:** यह मॉडल आपदा प्रबंधन (Disaster Management) और कृषि संबंधी निर्णयों (Agricultural Decision-Making) में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

एलोग्राफा इफ्यूसोरेडिका / Allographa effusosoredica

संदर्भ:

पश्चिमी घाट में लाइकेन की एक नई प्रजाति **Allographa effusosoredica** की खोज की गई है। यह खोज जैव विविधता से समृद्ध इस क्षेत्र की वैज्ञानिक महत्ता को और अधिक पुष्ट करती है। लाइकेन, जो शैवाल और फफूंद के सहजीवी संबंध से बनता है, पर्यावरणीय संतुलन और पारिस्थितिकी तंत्र के स्वास्थ्य का महत्वपूर्ण संकेतक माना जाता है।

भारत में खोजी गई नई प्रजाति: एलोग्राफा (Allographa) लाइकेन:

मुख्य जानकारी:

- यह नई प्रजाति क्रस्टोज लाइकेन (Crustose Lichen) प्रकार की है, जो effuse soredia और norstictic acid नामक दुर्लभ रसायन के कारण पहचानी गई है।
- Allographa वंश में norstictic acid का पाया जाना एक बहुत ही विशेष रासायनिक विशेषता है।

महत्त्व:

- यह भारत में पहली Allographa प्रजाति है, जिसे आणविक (molecular) डेटा के साथ प्रमाणित किया गया है।
- यह खोज भारत के अनुसंधान एवं नवाचार राष्ट्रीय प्रतिष्ठान (ANRF) द्वारा पश्चिमी घाट में लाइकेन सहजीवन (symbiosis) पर चल रहे प्रोजेक्ट के तहत की गई है।

भारत में टैक्सोनॉमिक स्थिति:

- यह भारत से खोजी गई 53वीं Allographa प्रजाति है।
- पश्चिमी घाट से खोजी गई 22वीं प्रजाति है।

सरकारी प्रयास: जैव विविधता वाले क्षेत्रों जैसे पश्चिमी घाट में अनुसंधान और संरक्षण को बढ़ावा देने के लिए नीतियों, पहलों और फंडिंग योजनाओं के माध्यम से सक्रिय प्रयास जारी हैं।

संयुक्त राष्ट्र विश्व खाद्य कार्यक्रम / UN WFP

संदर्भ:
हाल ही में भारत ने **संयुक्त राष्ट्र विश्व खाद्य कार्यक्रम (UN WFP)** के सहयोग से नेपाल में चावल के फोर्टिफिकेशन और आपूर्ति श्रृंखला प्रबंधन को सुदृढ़ करने के लिए एक नई परियोजना की शुरुआत की है। इस पहल का उद्देश्य नेपाल में पोषण सुरक्षा को बढ़ावा देना और कुपोषण से लड़ने के लिए फोर्टिफाइड चावल की पहुँच को मजबूत बनाना है।

नेपाल में चावल पोषण सुदृढ़ीकरण: भारत-यूएन सहयोग की नई पहल:

पहल का उद्देश्य: नेपाल में चावल के पोषण सुदृढ़ीकरण (Rice Fortification) और आपूर्ति श्रृंखला (Supply Chain) को मजबूत करना।

इसमें खरीदी प्रणाली, डेटा संग्रहण और कार्यबल कौशल विकास पर विशेष ध्यान है।

भारत का योगदान: भारत सार्वजनिक वितरण प्रणाली के अनुभव के आधार पर नेपाल को ज्ञान और प्रशिक्षण प्रदान कर रहा है। यह पहल **India-UN Global Capacity Building Initiative** का हिस्सा है।

कार्यान्वयन के चरण:

- **पहला चरण:** ज़रूरतों का मूल्यांकन और हितधारकों से संवाद।
- **दूसरा चरण:** नेपाली अधिकारियों का भारत दौरा—प्रशिक्षण और व्यावहारिक अनुभव के लिए।
- **तीसरा चरण:** प्रभावी चावल पोषण योजना हेतु कार्ययोजना तैयार करना।

प्रशिक्षण का माध्यम – ITEC: यह प्रशिक्षण भारत की ITEC (Indian Technical and Economic Cooperation) योजना के तहत हो रहा है।

इस योजना के तहत 2001 से अब तक **3000 से अधिक नेपाली अधिकारियों को प्रशिक्षण** दिया जा चुका है।

Global Capacity Building Initiative क्या है?

- सितंबर 2023 में संयुक्त राष्ट्र महासभा के 78वें सत्र में इसकी घोषणा हुई थी।
- इसका उद्देश्य दक्षिण-दक्षिण सहयोग (South-South Cooperation) को बढ़ावा देना है ताकि सतत विकास लक्ष्यों (SDGs) को प्राप्त किया जा सके।

यथामूल्य शुल्क / Ad Valorem Duty

संदर्भ:
अमेरिका ने अपनी व्यापक व्यापार नीति के तहत भारत पर **25% का अतिरिक्त ऐड वैलोरम टैरिफ** लगा दिया है, जिसमें राष्ट्रीय सुरक्षा को लेकर **रूसी तेल के आयात** को कारण बताया गया है। इससे पहले भी टैरिफ दर में वृद्धि की गई थी, और अब कुल टैरिफ दर **50% तक पहुंच गई है**। यह नया शुल्क **27 अगस्त 2025** से लागू होगा, हालांकि भारत को अमेरिका के साथ **21 दिनों की वार्ता की समयसीमा** दी गई है ताकि समाधान की संभावना बनी रहे।

मूल्य-आधारित शुल्क क्या है?

- **अर्थ:** Ad Valorem Duty एक ऐसा कस्टम शुल्क (customs tariff) होता है जो आयातित वस्तुओं के मूल्य (value) के आधार पर लगाया जाता है, न कि उनके वजन या मात्रा पर।
- **शब्द की उत्पत्ति:** "Ad valorem" लैटिन भाषा का शब्द है, जिसका अर्थ होता है – "मूल्य के अनुसार"।
- **कैसे अलग है?** यह शुल्क specific duties से अलग होता है, जो वस्तुओं की संख्या, वजन या आयतन के आधार पर लगाया जाता है, जबकि ad valorem duty केवल मूल्य पर आधारित होती है।
- **उदाहरण:** मान लीजिए किसी भारतीय उत्पाद की कीमत $1,000 है और अमेरिका में उस पर 25% ad valorem शुल्क लगता है, तो आयात शुल्क = $1,000 × 25% = **$250** लगेगा।
- **महत्वपूर्ण बिंदु:** यह शुल्क वस्तु की भौतिक विशेषताओं (जैसे – वजन या आकार) पर नहीं, बल्कि उसके बाजार मूल्य पर आधारित होता है।

Ad Valorem Duty की मुख्य विशेषताएं:

1. **मूल्य के अनुपात में:** शुल्क वस्तुओं के मूल्य पर आधारित होता है। यानी जितनी महंगी वस्तु, उतना ज्यादा शुल्क देना होता है।
2. **लचीलापन:** बाजार मूल्य या महंगाई जैसे कारकों के अनुसार वस्तुओं का मूल्य बदलता रहता है, जिससे शुल्क की राशि अपने आप उसी के अनुपात में बदलती रहती है। इससे यह प्रणाली समय के साथ प्रासंगिक बनी रहती है।
3. **वैश्विक उपयोग (Global Use):** यह शुल्क प्रणाली दुनियाभर में व्यापक रूप से अपनाई जाती है क्योंकि यह सरल, पारदर्शी और समझने में आसान है।

GS FOUNDATION For
UPSC & STATE PSC
इतिहास
अर्थव्यवस्था
भूगोल
भारतीय संविधान एवं राजव्यवस्था
1500x4
₹6000/-
₹4500/-
रोज़ाना लाइव क्लासेस
साप्ताहिक टेस्ट
क्लास की पीडीएफ (हिंदी + अंग्रेज़ी में)
लाइव डाउट सेशन
रोज़ाना प्रैक्टिस प्रश्न
COURSE VALIDITY
1 YEAR

FUNDAMENTALS OF
STOCK MARKET
LEARN HOW TO TRADE
FOUNDATION COURSE
OF MUTUAL FUND
INVEST IN KNOWLEDGE GROW YOUR WEALTH
COMBO OFFERS
COURSE FEE
₹4000/-
OFFER PRICE
₹2800/-
Course Validity
1 YEAR
BBK
Baaten Bazaar ki
एक निवेश समझदारी से..

FUNDAMENTALS OF
STOCK MARKET
LEARN HOW TO TRADE
Course fee
₹1999/-
COURSE VALIDITY
1 YEAR
INVESTMENT की करो जीरो से शुरुवात
Baaten Bazar Ki

FOUNDATION COURSE OF
MUTUAL FUND
Invest in Knowledge
Grow Your Wealth
Course fee
₹1999/-
COURSE VALIDITY
1 YEAR
एक निवेश समझदारी से..

PORTFOLIO BUILDING AND MANAGEMENT COURSE
+ (FUNDAMENTAL OF STOCK MARKET)
FREE
EMI AVAILABLE
» Long-Term Investing Foundations
» Principles of Value Investing and Stock
» Portfolio Construction Mastery
» Sectoral Investing
» Stock Picking Framework
» Active Portfolio Management Techniques
» Mega Cap vs Mid Cap Strategy
SPECIAL BONUS
COURSE VALIDITY
1 YEAR